बेटी होने का फर्ज़

चंदा यादव*

निभाना पड़ेगा
बेटी होने का हर फर्ज़
क्यों
क्योंकि
तुम बेटी हो
जिसका कोई घर नहीं होता
जिसका कोई हक नहीं होता
जिसके कोई जज़्बात नहीं होते
जिसकी कोई अहमियत नहीं होती
होता है तो
उस बेटी का सिर्फ एक धर्म
इज्जत बन इज्जत बचाना
नजरे झुका चुप हो जाना
बाप, भाई, पति, बेटे
तथाकथित सम्मानित पुरुषों
का मान बढ़ाना
उनकी बातों तले
अपने अरमान जलाना
निभाना पड़ेगा तुमको
क्योंकि बेटी हो तुम
यही रीति है जग की
माँ, नानी, दादी, बुआ, मौसी
सबने निभाई है
तुम क्या खानदान की लाज डुबाओगी
तुम क्या नाक कटवाओगी
बेटी हो तुम
एक चौखट की औकात है तुम्हारी
दूसरी चौखट तक वो भी मिट जाएगी
अरे कब समझोगी तुम बेटी हो
कुचली जाओगी पर सर पर नहीं बैठ पाओगी
कितनी भी लाडली हो
बेटे के सामने ही कई बार बेटी बताई जाओगी
क्या कर लोगी तुम
पर तुम कुछ तो कर लोगी
कुछ तिनका भर बदलाव
जो तुम्हारी
माँ, दादी, नानी, मौसी, बुआ ने नहीं किया
वो बदलाव
ताकि तुम्हारी बेटी को कोई ना कहे
बेटी हो
निभाना पड़ेगा
बेटी होने का फर्ज़
सिर्फ इतना बता दो इस दो मुंहे समाज को
बेटी हूँ कोई कर्ज़ नहीं हूँ
जो सारे फर्ज़ मैं ही निभाऊँ
तुम भी तो बाप, भाई, पति होने का फर्ज़ निभाओ
हमें सिर्फ हमारा हक देकर दिखाओ
आँखें दिखाओ नीचा मत दिखाओ
रास्ता दिखाओ थप्पड़ मत लगाओ
हौसला बढ़ाओ कर्ज़ मत बनाओ
मैं अपना हक ले लूँगी
तुम बस मुझे मेरे छोटे होने का
एहसास मत कराओ
कर जाऊँगी मैं जो किया नहीं तुमने पुरुषों
डरते क्यों हो
एक बार ये
समाज की बेड़ियाँ तो हटा कर दिखाओ
बेटी हूँ
निभाउंगी अब सिर्फ एक फर्ज़
अपना अपने लिए अपने प्रति
सम्मान का फर्ज़
अभिमान का फर्ज़
बेटी हूँ
गर्व है
अस्तित्व हूँ तुम्हारा
कोई नहीं मेरा कर्ज़ है!!

*****

* एनसीडब्ल्यूईबी, मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय), नई दिल्ली।